

SHRI ARUN KUMAR SHARMA

Shri Arun Kumar Sharma is presently Archaeological Advisor (Hon.) to Govt. of Chhattisgarh. He retired in 1992 from Archaeological Survey of India, Nagpur from the post of Superintending Archaeologist. After retirement, he worked as officer on Special duty in Indira Gandhi National Center for the Arts and excavated painted rock-shelters at Jhiri in M.P. in collaboration with French team. He was the leader of Indian team. Later on, he surveyed Tansa Valley near Mumbai on behalf of Gurudeva Siddhapeeth, Ganespuri and published a book. He was awarded senior fellowship by Indian council of Historical Research to survey and write report on Megaliths of Chhattisgarh. On behalf of Bodhisatva Nagarjuna Smarak Sanstha va Anusandhan Kendra, Nagpur, Shri Sharma excavated at Mansar, the Capital of Eastern Vakatakas from 1990 to 1998 and at Sirpur in Chhattisgarh from 2000 to 2004 and later on from 2005 to 2012 on behalf of Chhattisgarh Government. During his career in Archaeological Survey of India, he excavated sites throughout India, particularly in Gujarat, Rajasthan, Haryana, Jammu, Maharashtra, Lakshadweep, Himachal Pradesh and Chhattisgarh and published the reports. Shri Sharma visited France in 1990 under Cultural exchange programme. He is the member of Central Advisory Board of Archaeology and Member Standing Committee.

2. Born on November 12,1933, Shri Sharma received the Master of Science in Anthropology from University of Saugar in 1958 and joined Archaeological Survey of India in 1959. In 1968, he did Post Graduate Diploma in Archaeology from New Delhi where he received Moulana Azad Memorial Gold Medal for topping and several prizes. During his career he has been awarded several prizes and has so far published 35 books on archaeology.

3. After studying animal skeletal remains from Lothal and Kalibangan, Shri Sharma proved that horse was domesticated in India and that Indus Valley people were indigenous and did not come from outside.

4. Shri Sharma has been witness in Chief in Babri-Masjid-Ram-JanmaBhumi, Ayodhya Case, in Lucknow Bench of Allahabad High Court and proved to the satisfaction of the court that there was a Shri Ram Temple which was demolished and from the debris of the temple so-called incomplete mosque was raised and that was the birth place of Shri Ram. Shri Sharma is presently excavating at Rajim in Chhattisgarh. Recently in January 2017, Shri Sharma along with his team reconstructed Ganesh Statue at insurgent infected area at Dholkal in Dantewada district of Bastar region within a week of demolition.



श्री अरूण कुमार शर्मा

श्री अरूण कुमार शर्मा वर्तमान में छत्तीसगढ़ सरकार के पुरातात्विक सलाहकार (मानद) हैं। वर्ष 1992 में आप भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नागपुर से अधीक्षण पुरातत्वविद के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के उपरांत आपने फ्रांसीसी टीम के सहयोग से मध्य प्रदेश में झीरी स्थित इंदिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर द आर्ट्स एंड एक्सवेटेड टॉक- शेल्टर्स में विशेष ड्यूटी अधिकारी के रूप में कार्य किया। आप भारतीय टीम की अगुआई कर रहे थे। इसके बाद गुरूदेव सिद्धपीठ, गणेशपुरी की ओर से मुंबई के पास तन्सा घाटी का सर्वेक्षण किया था और इस पर एक पुस्तक प्रकाशित की। आपको भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद द्वारा छत्तीसगढ़ के मेगालिथों का सर्वे करने तथा इस पर रिपोर्ट तैयार करने हेतु सीनियर फेलोशिप प्रदान की गई। आपने बोधिसत्व नागार्जुन स्मारक संस्था व अनुसंधान केन्द्र, नागपुर की ओर से 1990 से 1998 तक पूर्वी वकाटाकास की राजधानी 'मंसार' और छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से 2000 से 2004 तक तथा बाद में 2005 से 2012 तक छत्तीसगढ़ के सिरपुर में उत्खनन का कार्य संपन्न कराया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में अपनी सेवा के दौरान आपने पूरे भारत, विशेषकर, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, जम्मू, महाराष्ट्र, लक्षद्वीप, हिमाचल प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में स्थलों का उत्खनन कराया और रिर्पोटें प्रकाशित कीं। वर्ष 1990 में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत आपने फ्रांस का दौरा किया। आप पुरातत्व संबंधी केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड तथा स्थाई समिति के सदस्य हैं।

2. आपका जन्म 12 नवंबर, 1933 को हुआ। आपने वर्ष 1958 में सागर विश्वविद्यालय से मानव मिशन में विज्ञान की परास्नातक उपाधि प्राप्त की और वर्ष 1959 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में कार्य ग्रहण किया। वर्ष 1968 में आपने नई दिल्ली से पुरातत्व विज्ञान में परास्नातक डिप्लोमा किया जहां शीर्षतम स्थान प्राप्त करने के लिए आपको मौलाना आजाद स्मारक स्वर्ण पदक तथा कई और पुरस्कार प्राप्त हुए। अपने सेवाकाल के दौरान आपको कई एक पुरस्कार प्राप्त हुए और पुरातत्व विषय पर अब तक आपने 35 पुस्तकों का प्रकाशन किया है।

3. लोथल एवं कालीबंगन से प्राप्त जानवरों के कंकाल के अवशेषों का अध्ययन करने के बाद आपने यह सिद्ध किया कि घोड़े को भारत में पालतू जानवर बनाया गया और यह भी कि सिंधु घाटी के लोग, देशी लोग थे, वे बाहर से नहीं आए थे।

4. आप इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच में चल रहे बाबरी-मस्जिद-राम-जन्म भूमि, अयोध्या के मामले में प्रमुख गवाह रहे हैं और आपने यह सिद्ध कर न्यायालय को संतुष्ट किया कि वहां पर एक श्रीराम मंदिर था जिसे ध्वस्त कर दिया गया था और मंदिर के अवशेषों से तथाकथित अपूर्ण मस्जिद निर्मित की गई थी और वह स्थल श्री राम की जन्म स्थली थी। आप इस समय छत्तीसगढ़ के राजिम में उत्खनन का कार्य करा रहे हैं। हाल ही में, जनवरी, 2017 में आपने बस्तर क्षेत्र के दंतेवाड़ा जिले में धौलकाल स्थित विद्रोह प्रभावित क्षेत्र में अपनी टीम के साथ गणेश मूर्ति के ढहाए जाने के एक सप्ताह के अंदर ही इसे पुन: निर्मित कर दिया।